

অংকিতাব্দী - গ্রীক রাষ্ট্রচিক্তাৰ বেজিস্ট্য

Sem-4, CC-10, Module-1

- By T.K.D [২৫.৪.২০]

ওক্ষা পক্ষ অন্তর্ভুক্ত "Greek Political Theory" নামক
প্রচলু বলেছেন রাজনৈতিক চিন্তাবাবৃত্তি পাত হাতে গ্রীক মুদ্রণ,
গ্রীক জনগোষ্ঠীজনাবৰ পরিষ্কৃত মুক্তিবাদীতা এবং প্রিতৰ্বী জানমিকতা
রাষ্ট্রচিক্তাৰ উদ্দৃবেষ্ট অন্তৰ্ভুত জড়িত, উভয়বাবৃত্ত (weber) মনে রয়েছে
বৰ্তমানে আজৱাৰ মাধ্যক রাষ্ট্রচিক্তা বলি, বিশেষ বৰ্ততে পশ্চিমী
রাষ্ট্রচিক্তা, আৰু রাজনৈতিক গ্রীকদেৱ সৃষ্টি, কৰ্ত অ্যাবোইন ঘনে
বৰ্তনে আৰুনিক রাজনৈতিক ধাৰণাশুলি মেমন - ন্যাম্পথিচাৰ,
স্বৰ্ণীন্দ্ৰা, আহুরিবাদিক ব্যবস্থা, আছিন ইত্যাদি ইকলৈশুগ্রীক অৱৱ
ও প্রাতিষ্ঠানিক ব্যবস্থাৰ প্রতিমূলন, তত্ত্ব, আৰুনিক রাজনৈতিক
চিন্তাবনাব প্রায়মিক ভিত্তি গ্রীকিয় মৰ্কনিকিতাৰ ম্যাজান দিয়েছি-
লেন, যাৰ প্ৰজাৰ বৰ্তমান মুগেও অনুসৃত হয়, দপ্তৰো ও অ্যাবিঞ্চিটল
অদৰ মৰকালীন গ্রীক রাজনৈতিক ইটনারলী ও প্রতিষ্ঠানেৰ
আলোকক মে রাজনৈতিক আৰ্দ্ধা ও মলিত রাষ্ট্রবিজ্ঞান আলোচনাত
জন্ম দিয়েছিলোন আৰু ধাৰাবাহিকতা আৰু পৰিলক্ষিত হৈ,

প্ৰজন্মত গ্রীক রাষ্ট্রচিক্তাৰ উদ্বোধ ও বিবৰণীয়াৰ আলোচনা
কৰতে গোলে এই বোলীৰ গ্ৰীকেৰ আৱাজিক, রাজনৈতিক ও
আহুতিক পৰিবেশেৰ বিজ্ঞেন প্ৰাণবিবৰণীবেৰ প্ৰয়ে গতি,
গ্রীক নগৰৰাষ্ট্ৰশুলিৰ পারম্পৰাবিক হোৱালিক বিচ্ছিন্নতা জ্ঞানিন
রাজনৈতিক ধাৰণা ও প্রতিষ্ঠানেৰ অৱৰ্দ্ধ দিয়েছিল, অবিজাপুৰ দার্শন
মনে কৰতে নগৰৰাষ্ট্ৰকেন্দ্ৰিক গ্রীকিয় জীবন ইকল রাজনৈতিক
মৰ্কনেৰ উদ্বোধ পেছুনে কিয়াৰীল ছিল,

* নিষ্পত্তি গ্রীক রাষ্ট্রচিক্তাৰ বেজিস্ট্যশুলি উল্লেখ
বৰিনাম : -

- ।) প্ৰাচীন গ্রীকিয় রাষ্ট্রচিক্তাম রাষ্ট্র ও অংশ অৰ্থাৎ রাষ্ট্র ও ধৰ্মীয়
অংগৈনেৰ ইধৈ কোন স্বীকৃত বিভেদবেংধা কোন হয়নি, বৰ্ত্তিত ও
অংশাজৰ ইধৈ ও কোনৰূপ পার্শ্বকৰ্তৃ ছিল না, বৰ্ত্তিত মৰ্কলকে
মৰণ অংশাজৰ অংশল হিসাবে গৰ্ব কৰা হৈ, এ প্ৰজন্ম
অ্যাবিঞ্চিটলোৰ প্ৰযোগ উক্তি উল্লেখযোগ্য : মে আনুষ অংশ
বহিষ্ঠতাবে বৰ্ণতে চাহু মে হয় পশ্চা নয় কৰতা,
- ॥) প্ৰাচীন গ্রীকে দোকানী মৰ্কনিকদেৱ রাষ্ট্রচিক্তাৰ উদ্বোধক ছিলো
গৰ্ব কৰা হয়, দোকানীদেৱ মৰ্কন চিন্তাম অফিতাৰাদ শুলক
পেমেছিল, যাকৃতিৰ অন্তৰ্ভুত অংশকৰ্তৃ উপস্থুত কোৱো কি

ରୁହଣୀ ଡେଚିଟ ଦ୍ୱାରା ଅନୁମତି ଆବଶ୍ୟକ କରାଯାଇଲେ, ଆବଶ୍ୟକ ପରିଷକ-
କ୍ଷେତ୍ର ଉତ୍ତିଷ୍ଠାନ ଓ ତାର ଅନୁତାଙ୍ଗୀଗାନ ବ୍ୟାସ୍ତେତ୍ୟବସ୍ତୁତ ପ୍ରଯାମ୍ଭ ପଢ଼ିମେଗିଲେ
କ୍ଷେତ୍ର ମୂଳ୍ୟ ନିର୍ଭବତାର କମା ଆଟାଳାଚାନ କରାଯାଇଲେ, ଲୋକାଯେଉ ଦକ୍ଷଳେ
କିନ୍ତୁ ମୀ ପରିଷକାନ ପ୍ରୟେ ଟଙ୍କାବିକାଳୀ ଦ୍ୱାରାନ ଆଶେଜେତ୍ର ଧାରନୀମୁଁ ପ୍ରଥମ
ଛିନ୍ତାର କରାଯାଇଲେ, ପ୍ରୟେ ପ୍ରଧାନତ ସହିତୀଗତ କ୍ଷେତ୍ରରେ ସମବାଦ କରାଯାଇଲେ,
ଏହି ନଗରବ୍ୟାସ୍ତେତ୍ ଗଭାବୁଗାତିକରତାର ସମ୍ଭବ ଏହିର କୋଣେ ଝାଗରା ଛିଲନା,

ii) ଅବେ ଶ୍ରୀମିଶ୍ ବ୍ୟାସ୍ତେଚିନ୍ତାର ଅବଧିକାଳୀ ପୁରୁଷ ଟେକିଷ୍ଟ୍ ଦ୍ୱାରା ଚରମ
ମୁକ୍ତି ନିର୍ଭବତା, ଏହି ଚାନ୍ଦିକା ପଦ୍ଧତି, ବର୍ଜନ ପ୍ରୟେ, ଅନ୍ତାଳୋଚନାବାଦ
ବ୍ୟାସ୍ତେ ଆଶାମ୍ୟ ମୁକ୍ତି ନିର୍ଭବତାର ବିଜୟମୃତ୍ସମ୍ମ ପରିଷକ୍ଷା କରାଯାଇଲେ,
ଶ୍ରୀକ ଓଡ଼ିଆମୁଁଷେ ବ୍ୟାଜନୀତି ଓ କୈତିକରାତାର ଝର୍ଣ୍ଣ କୋଣାର୍କ ପାଞ୍ଚବର୍ଷ
ବର୍ଷା ମୁଣି, ବଳା ମୁଣି ମେ, ଅଗମ୍ବ ଶ୍ରୀମିଶ୍ ବ୍ୟାସ୍ତେଚିନ୍ତା ନୀତି କିନ୍ତୁ ବର୍ଷାନୀତା
ଓପରୁ ଡିକ୍ରିକୀଳ ଛିଲ, ଏହିକି ଦିନ୍ମୁ ବିଜାର କରିବାର ବଳା ମୁଣି ମେ,
ପ୍ରଦେଶୀ 'Republic' ଛିଲ ବ୍ୟାଜନୀତି ଅବେଳା ଅବେଳା କରିବାର ନୀତିରେଖ
କିମ୍ବା,

iv) ଶ୍ରୀକ ବ୍ୟାସ୍ତେଚିନ୍ତାରିତା - କିନ୍ତୁ ଏହିକି ପୁରୁଷ ଆବାପ
କରିବାର ଗିମ୍ବେଟ୍ରିଲେନ, ଏହି ଅନ୍ତିଧୀନର ଆଶ ପର୍ମ ଉପଲବ୍ଧି କରିବା
ହଲେ ଜନଗନନ୍ଦକେ କିମ୍ବିତ କରିବାର ତାଳା ପ୍ରଦ୍ୟାମନ ଆବଶ୍ୟକ
ଅତ୍ୟନ୍ତ ଟଜାର୍ଦେତ୍ କରିବାର ପ୍ରାଚୀନ କରିବାର ଗିମ୍ବେଟ୍ରିଲେନ, ତାର ଶିକ୍ଷାତ
ବ୍ୟବଶାଖିକ ଦିକ୍କଟି ଉପରେ ଅଧିକ ଟଜାର ଦିମ୍ବେଟ୍ରିଲେନ, ଯା
ଆଜ୍ଞାମଂ ଯମ, ପ୍ରଦେଶପ୍ରେମ, ଅନ୍ୟକିଳିତ ଓ ଅନନ୍ତ ଅନୁରାଗ
ପୁନାବଳୀକେ ବଧିତ କରିବାର ଆଶାମ୍ୟ କରିବା.

v) ଶ୍ରୀକ ଦାକ୍ତନିକ ବା ବ୍ୟାସ୍ତେଚିନ୍ତାର ଆବରଣ୍ଟି ଅନ୍ୟତଙ୍କ ଟେକିଷ୍ଟ୍
ହଲ କ୍ଷତ୍ରକେ ବ୍ୟାଜନେତିକ - ତୀର ଛିମେଟବେ ବ୍ୟାଧ୍ୟାଯିତ କରିବା, ଶ୍ରୀକ
ଦାକ୍ତନିକଙ୍କର ବ୍ୟାକ୍ଷେତ୍ର ଆନ୍ତର୍ମୁଦ୍ର ଛିଲ ପ୍ରକାଶିତାବାଦରେ ପ୍ରକାଟି ବ୍ୟାଜନେତିକ
ତୀର, ତୀର ଅନେ କରିବାର ବ୍ୟାସ୍ତେତ୍ ଅର୍ଥରେ ବ୍ୟକ୍ତିଗତ୍ସ୍ଵାତ ପୁରୁଷବିନ୍ଦି
ହଟେ, ଅତିଥ ବ୍ୟାସ୍ତେ ଛିଲ ଜାନର ଅଭାବରେ ଏହି ଅପରିହାର୍ୟ ଅନ୍ତରେ,
ଅଜାଧିକ୍ଷଟ୍ଟିଲେନର କଳ୍ପନୀତ ବ୍ୟାସ୍ତେ ପ୍ରକାଟି ଛାଜାବିକ - ଏହି ପ୍ରଯୋଜନୀୟ
ଅନ୍ତରେନକୁଳେ ପ୍ରତିଭାବ ବନ୍ଦୁଦ୍ଵାରା, ବ୍ୟାସ୍ତେତ୍ ଜନ୍ୟ ବଳ 'Highest
Common good' (ଅର୍ଥାତ୍ ଉତ୍ସାହର ବନ୍ଦୁଲ ଆଧିନ). ବ୍ୟାସ୍ତେ ଏହି କ୍ଷତ୍ରକେ
ଶ୍ରୀକ ଦାକ୍ତନିକାଳୀ ପ୍ରକାଟି ମାରାଜିକ ଆମଣ୍ଗୀକରାତାର ଝର୍ଣ୍ଣ ପକାଇ
କରାଯାଇଲେ,

vi) ଶ୍ରୀକ ବ୍ୟାସ୍ତେଚିନ୍ତାର କୁଣ୍ଡିଯାଦ ଅନ୍ୟଭାବ ଟେକିଷ୍ଟ୍ ହିମାଦର
ଚିକିତ୍ସା ହର୍ମେ ଆଦି, ଶ୍ରୀକ ଚିନ୍ତାରିତା ଅଦେତ୍ ଚିନ୍ତାବାଦ
ଶୁଣ୍ଡିଯାଦ ଏହି ଆଶ ପର୍ମପୁରୁଷ ମୁନ ପ୍ରଦାନ କରାଯାଇଲେ, ଆଶ କିନ୍ତୁ
କରିବାର ଏ ଶୁଣ୍ଡି ହଲ - ପରିମାତ୍ର,

vii) किंतु तो यास्टीयू जीवनके व्यविधानते परिचालना करायाम्ह तो
यास्टीयू जीवनते स्थायित्वे भित्र कि? तो इसलक्षणे कठकाश्वले
आदर्शमान ओ निर्देशनीयि ग्रीष्म चिन्तायिता दिये छिले यास्टीके आदर्श
विमाते प्रतिक्षिप्त वज़ा, एवं वर्तये कर्तव्ये प्रति उत्तित वज़ा,
सूखाअनेत् धार्वाटिके चिह्नित वज़ा व्यवित्तुर् अर्धे छिल ग्रीकि
चिन्ताकृ उत्तर्व,

viii) अत्र इसलके ग्रीकान्ते धार्वां आदर्श युक्ति उपर्युक्त
आथे इनिष्टिउट व्यवित्तिति छिल, आठिनके यास्टी आनयाम्ह
वले अने व्यवहार, ग्रीष्म यास्टीचिन्तायिता न्याययितावके एवं
ग्रुहस्थ पूर्व ग्रुह विमाते चिठ्ठना वर्तदेशिले, चिन्तायिता अने
वर्तवते आठिन ओ न्याय चित्त एवं युद्धां छाँटि किं एवं
आदर्श अन्ते न्याय छिल या आठिन अनुसारे यित्त,

प्राचीन श्रीदेवता श्राविष्ठानिके व्यवस्था एवं यास्टीचिन्तायू
व्यक्तिके असम अज्ञातेव अस्तु अंशकृपे गण्ड वज़ा हता,
उत्ते इज्जनीयू उगतेव न्यायवास्तीके व्यवस्थाम् नागरिकाण्डा छिल
श्रीमाता, यत् प्रतिमलन श्रीसिंह यास्टीचिन्ताम् लक्ष्य वज़ा याम्ह,
एवमयू श्रीताम् प्रभातके व्यापकाजाते व्यापकान वज़ा इयेछिल,
एवनिति अजारिक्टिलाओ श्रीतामलके लक्ष्याजनीयू प्रतिष्ठानकृपे
तुले धर्वाच्छुन, उत्ते नामदेव नागरिके अधिकारे छिल ना,

लविटज्यम्ये वला याम् यास्टीके समाज आमाजिक
अंगठिनान् शीर्ष छानीयू वले अने वज़ा हता, अजाते यास्टी
आमाजिक ओ टेनिकित आन निक्यू वज़ा इयेछिल, अजारिक्टिल
यास्टीके अस्तुलगाम् जीवन गहडे तेजात् जाईजे कृपे देखेटि-
लेन, तो अस्तु देखन विष्युदाता जीवनेत्, तेजनि अर्वाच्छि
क जीवनेत् दक्षत्वे ओ प्रझावित छिल, अत न वजा याम् ये
अनोआठ याई आकृत ना देख देखेव असम् यास्टी व्यवहारे
कृकृल धार्वां शुक्ल उपवश्चिल द्ये, यास्टी यदि अने वज़े
आवले व्यक्तिजीवनेत् अतिरुच्छ विष्युदाते निष्कृत वर्तवते
पाठे, त्रित् अर्वाच्छुक यास्टी धार्वां पर्वतीकाले
इत्तेवालीयू यास्टीचिन्ताकृ धार्वादेव श्रीराधिक विष्कृत वज़ुद्ध,